

पर्यटन द्वारा विकास

आज पर्यटन किसी भी देश के विकास का माध्यम बन गया है। अब यह एक संगठित उद्योग है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इसका बहुत अधिक महत्व हो गया है। विश्व के व्यापार में पर्यटन का भाग 10 प्रतिशत है। कुछ विशेष देशों के व्यापार का 40 प्रतिशत भाग पर्यटन से प्राप्त होता है। अतः व्यापार व भुगतान असन्तुलन को कम करने व दूर करने में पर्यटन विशेष भूमिका निभा सकने की सामर्थ्य रखता है।

पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने वाले तत्त्व

पर्यटन उद्योग को कुछ सामान्य व विशिष्ट कारणों से बहुत अकि बढ़ावा मिला है।

(अ) सामान्य कारण

- (1) औद्योगिक क्रान्ति ने व्यापार में विस्तार किया।
- (2) परिवहन के क्षेत्र में तेजी से सुधार हुआ।
- (3) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विभिन्न देशों के बीच आर्थिक व सांस्कृतिक सहयोग बढ़ा।

(ब) विशिष्ट कारण

- (1) बीसवीं शताब्दी के मध्य में उपनिवेशों की समाप्ति के बाद भी यूरोप व अमेरिका की आर्थिक समृद्धि कम न होकर और अधिक बढ़ गई। उनके पास विश्राम व सैर सपाटे के लिए पर्याप्त समय व धन है।
- (2) तेल समृद्ध देशों के लोगों की आय बहुत बढ़ गई है। अतः वे सैर सपाटे पर बहुत धन व्यय करते हैं।

भारत की स्थिति

- (1) भारत का व्यापार व भुगतान असन्तुलन बहुत अधिक है। हम आयात अधिक व निर्यात कम करते हैं। भुगतान के बारे में भारत की स्थिति चिन्ताजनक है।
- (2) निर्यात बढ़ाने की सम्भावना कम है। जिस वस्तु का निर्यात बढ़ाया जाता है उसकी आन्तरिक पूर्ति कम होने से कीमतें बढ़ जाती हैं।
- (3) बेरोजगारी व गरीबी अधिक है। उद्योगों में पूंजी निवेश व विकास दर नहीं बढ़ पा रही।
- (4) भारत में पर्यटन की सम्भावना बहुत अधिक होते हुए भी कम पर्यटन आते हैं। भारत से बहुत छोटे देश सिंगापुर, कोरिया, इन्डोनेशिया, मलेशिया आदि भारत से अधिक पर्यटक आकर्षित करते हैं।
- (5) पर्यटन एक ऐसी सेवा है जिसका चाहे जितना निर्यात किया जाये इसके भण्डार में कोई कमी नहीं आती।

हिमाचल प्रदेश की भूमिका : पर्यटन के विस्तार के लिए हिमाचल प्रदेश की स्थिति बहुत उज्ज्वल व आशाजनक है। राज्य में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो पर्यटन को बहुत अधिक बढ़ावा देती हैं। साथ ही पर्यटन हिमाचल जैसी पहाड़ी राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह न केवल सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक विकास का आधार बन सकता है, वरन् विदेशी मुद्रा कमाने का भी एक अच्छा साधन है। पहाड़ी क्षेत्रों की भू-संरचना के कारण इन भागों की अर्थव्यवस्था मन्द व रुग्ण मानी जाती थी वहीं पर्यटन के कारण अब यही भू-संरचना एक वरदान बन गई है।

(i) **सुन्दर प्राकृतिक दृश्य :** प्रकृति ने हिमाचल प्रदेश को भौगोलिक विभिन्नता एवं नैसर्गिक सुन्दरता प्रदान की है। हिमाचल के हिमाच्छादित धवल पर्वत शिखर, उनके नीचे ऊँचे-ऊँचे सीधे आसमान को

हूँ नुकीली पत्ती वाले बन, घाटियों में लहलहाती फसलें, झरनों से गिरता पानी, मन्द मन्द मुस्कराते हुए फूल, मधुर फल, कल-कल, छल-छल की संगीत पैदा करती हुई विपुल जल राशि से परिपूर्ण मदमाती-सी उर्ध्वखल नदियां ऐसे सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करती हैं कि पर्यटन मनमुग्ध होकर इनकी सुन्दरता का रस चान करता रहे परन्तु उसका मन न ऊबे।

(ii) **ठण्डी स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु** : हिमाचल प्रदेश शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है। ऊंचाई की भिन्नता के कारण जलवायु में भिन्नता है। गर्मियों में जब सारा देश गर्मी से झुलस रहा होता है, लू से तप रहा होता है, तब पड़ोस में भी हिमाचल उन्हें हवाओं के शीतल, झोंकों से आराम पहुंचता है। यूरोप व अमेरिका जैसे ठण्डे देशों के लिए भी यहां की जलवायु बड़ी अच्छी है। अतः यह बहुत से सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

(iii) **धार्मिक आस्था के प्रतीक मन्दिर व मठ** : हिमाचल प्रदेश देव भूमि है। यह ऋषि-मुनियों की वसस्थली थी। ज्वालाजी, कांगड़ा, चिन्तपूर्णी, बैजनाथ, बाबा बालकनाथ, नयना देवी आदि बहुत से मन्दिर हजारों श्रद्धालुओं को आस्तिक भावना से अपनी ओर आकर्षित करते हैं। लाहौल-स्पिति व किन्नौर के मठ बौद्ध धर्म के अनुयायियों को आकर्षित करते हैं। धर्मशाला दलाईलामा का मुख्यालय है।

(iv) **साहस व जोखिम से भरे खेल** : स्केटिंग, स्काइंग, पर्वतारोहण व हैंडग्लाइडिंग जैसे साहस व चुनौतियों से भरपूर खेलों के लिए भी हिमाचल में अनुकूल अवसर है। शिमला में स्केटिंग, कुफरी में स्काइंग, मनाली में पर्वतारोहण व पालमपुर में हैंडग्लाइडिंग की सुविधा उपलब्ध है।

(v) **मनोरंजन** : हिमाचल प्रदेश के मेले, मेलों में लोक संगीत से थिरकते हुए सुन्दर युवक व युवतियों के कदम भिन्नता लिए हुए पोषक, मधुर कण्ठ से सुरीली आवाज़ में गये गये प्रणय गीत स्वस्थ मनोरंजन के अच्छे साधन हैं।

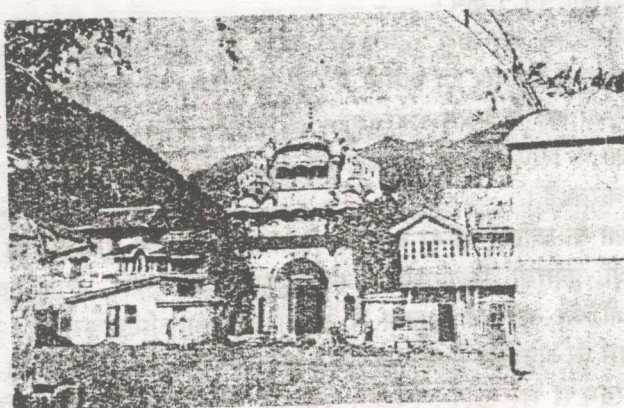
(vi) **लोग** : हिमाचल प्रदेश के लोग शान्तिप्रिय, मेहनती व ईमानदार हैं। ये आने वाले मेहमानों का सदियों से आदर सत्कार करने के अभ्यस्त हैं। यहां की धरती वंद, आन्दोलन, हत्या जैसी घटनाओं से मुक्त है।

हिमाचल प्रदेश में पर्यटन का विकास

1966 में पंजाब के पहाड़ी भागों के हिमाचल प्रदेश में विलय के बाद राज्य में पर्यटन विकास के बारे में गम्भीरता से काम हुआ। पुनर्गठन के फलस्वरूप कुल्लू-मनाली, शिमला, डलहौजी, कांगड़ा, धर्मशाला, कसौली, चैल जैसे पर्यटन आकर्षण के केन्द्र हिमाचल प्रदेश में आ गये। कश्मीर से अशान्ति के बाद हिमाचल प्रदेश भारत वर्ष में सबसे अधिक पर्यटकों को आकर्षित कर सकने वाला राज्य बन गया है। पर्यटन के विकास के लिए कुछ सहायक संरचनाओं का विकास किया गया है। पर्यटन विकास निगम के राज्य में आठ पर्यटक कम्प्लेक्स कार्यरत हैं जो शिमला, चैल, सोलन, परवाणु, मण्डी, कुल्लू, मनाली, धर्मशाला, पालमपुर, डलहौजी, चम्बा, पांवटा व रेणुका में हैं।

(1) **सहायक संरचनाओं का विकास** : पर्यटकों को ठहरने के लिए आरामदायक कमरे, अच्छे खाना-पीना, मार्ग में जलपान के सुन्दर केन्द्र, आवागमन के लिए आरामदायक बसें व शीघ्र आने जाने के लिए वायु-सेवा की बहुत ज़रूरत होती है। हिमाचल प्रदेश पर्यटक विकास निगम ने सुसज्जित होटलों, बंगलों, कोटेजों व युवा होस्टलों में 3000 बिस्तरों का प्रबन्ध दिसम्बर 1990 तक कर दिया था। जबकि 1972 में सिर्फ 257 बिस्तरों की सुविधा थी। महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों के अलावा राष्ट्रीय व राज्य मार्गों पर 23 जलपान गृहों का निर्माण किया। परिवहन के क्षेत्र में 35 वातानुकूलित लग्जरी कोच, कार व जीपों का एक काफिला है जो पर्यटकों को सैरगाह की यात्रा कराता है। वर्ष 1983 में निगम ने 80 विदेशी टोलियों को परिवहन की सेवा उपलब्ध करायी। निगम के व्यापारिक परिवहन दस्ते ने 1.24 लाख

पर्यटकों को परिवहन की सुविधा जुटाई। निगम अपने दस्ते की 80 प्रतिशत क्षमता का उपयोग कर रहा था। आगामी वर्षों में नये होटलों का निर्माण होगा तथा और अधिक बिस्तरों का विस्तार हो पायेगा।



धार्मिक आस्था का प्रतीक बौद्ध मन्दिर

(2) मनोरंजन आकर्षणों का निर्माण : पर्यटक को बिस्तर, भोजन व आने जाने की सुविधा के अलावा अन्य आकर्षण भी चाहिए ताकि वे अपने प्रवास को बढ़ा सकें। इसके लिए राज्य में वोटनीकल गार्डन, रज्जू मार्ग, पानी बर्फ के खेल ऊंचे पर्वतों पर पर्वतारोहण जैसे आकर्षणों का निर्माण किया जा रहा है। परवाणु के पास रज्जू मार्ग का निर्माण हुआ है। ऐसे और भी अनेक रज्जू मार्ग बनाने होंगे।

(3) वायु सेवा : पहले सेवा सिर्फ कुल्लू में ही उपलब्ध थी। अब शिमला का हवाई अड्डा बन गया है। वहां से व्यापारिक उड़ानें भी हो रही हैं। कांगड़ा का हवाई अड्डा गंगल में बनकर तैयार हो गया है। यहां से भी व्यवसायिक उड़ानें शुरू हो गई हैं।

(4) पैकेज टूरों का आयोजन : सर्दियों में होटल खाली रहते हैं। बहुत कम पर्यटक आते हैं। स्थापित क्षमता का पूरा उपयोग करने के लिए पर्यटन विकास निगम ने सारे वर्ष चलने वाले पैकेज टूरों का आयोजन किया है। इनमें कांगड़ा घाटी में तीर्थटन के लिए, शिमला, चैल, वाइल्ट फ्लावर हाल एवं मनाली में कांफ्रेंस की सुविधा जुटाई है। फिल्म निर्माताओं को भी हिमाचल के दृश्य दर्शकों के लिए आमंत्रित किया गया है।

इस दिशा में तीन लड़ी भाग (ट्रैवल सर्किट) तैयार किए गए हैं। इनमें पर्यटकों को एक लड़ी (सर्किट) पर स्थित सभी पर्यटक की सैर कराई जाती है ये हैं :

(i) परमाणु-चैल-कुफरी-नारकंडा-शिमला।

(ii) डल्हौजी-खजियार-चम्पा-कांगड़ा-धर्मशाला-पालमपुर-ज्वालामुखी-विलासपुर-चण्डीगढ़।

(iii) कुल्लू-मनीमाजरा-कुल्लू-मनाली-कुल्लू।

(5) अन्य : (i) धार्मिक उद्देश्य से आये पर्यटकों की सुविधा के लिए ज्वाला जी में 70 बिस्तरों से युक्त एक होटल का निर्माण किया गया है। यहां सभी आधुनिक सुविधायें जुटाई गई हैं।

(ii) मनीमाजरा में गर्म पानी के चश्में हैं। यहां एक पर्यटक काम्पलेक्स बनाया गया है जिसमें जलपानगृह, सोना व टर्किश बाथ की सुविधायें जुटाई गई हैं।

(iii) शिमला-कालका मार्ग पर सोलन के समीप बड़ोग में भी एक पर्यटक स्थल बनाया गया है। यह बहुत लोकप्रिय हुआ है। यहां होटल व सम्मेलन करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। पास ही कसौली है।

(6) नई पर्यटन नीति में प्रतिबन्धित क्षेत्रों को पर्यटकों के लिए खोलने के लिए व्यापारिक पर्यटन को निजी क्षेत्र के लिए छोड़ दिया गया है।

उपरोक्त सुविधाओं व सहायक संरचनाओं का उत्तरोत्तर विस्तार हो रहा है। इस शताब्दी के अन्तिम दशक में हिमाचल प्रदेश में पर्यटक उद्योग के मजबूत होने की पूरी सम्भावनायें हैं। इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में राज्य की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

समीक्षा : इन सभी उपायों के बाद वास्तव में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि नहीं हो पा रही। 1985 में भारत में 12 लाख विदेशी पर्यटक आये जिनमें से हिमाचल में सिर्फ 20 हजार ही आये। 1985 के बाद राज्य के आवास गृहों में ठहरने वाले देशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या में कमी आई है। शिमला जैसे राजधानी क्षेत्र में भी बर्फ पड़ते ही बिजली, पानी, परिवहन की सुविधाएं लड़खड़ा जाती हैं। पर्यटकों का शोषण ही नहीं होता वरन् वह बहुत परेशान भी होते हैं। अतः बुनियादी सुविधाओं में सुधार की बहुत आवश्यकता है।

अभ्यास-प्रश्न

(अ) निबन्धात्मक प्रश्न

- (1) पर्यटन का महत्व बताते हुए प्रभावित करने वाली प्रमुख बातों का वर्णन करो। साथ ही इस सम्बन्ध में भारत की स्थिति पर भी प्रकाश डालिये।
- (2) हिमाचल में पर्यटन की सम्भावना को प्रभावित करने वाले तथ्यों का वर्णन करो।
- (3) सरकार पर्यटन को बढ़ाने के लिए क्या उपाय कर रही है ? वर्णन करो।

(ब) लघु उत्तर प्रश्न

- (i) पैकेज टूर कार्यक्रम का वर्णन करो।
- (ii) पर्यटन के लिए सहायक संरचनाओं के विकास का उल्लेख करो।
- (iii) हिमाचल की प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों को आकर्षित करती है। इस कथन को स्पष्ट करो।
- (iv) गर्मियों में पर्यटक हिमाचल में क्यों आते हैं ? स्पष्ट करो।
- (v) पर्यटकों के आकर्षण के लिए हिमाचल में क्या काम किये जा रहे हैं ? उल्लेख करो।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो

- (i) विश्व के व्यापार में पर्यटन का भाग प्रतिशत है।
- (ii) 1985 में हिमाचल में पर्यटक आये।
- (iii) हेंगग्लाईडिंग की सुविधा में है।
- (iv) गगल में है।
- (v) दलाई लामा का मुख्यालय है।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाओ।

- (i) हिमाचल की प्राकृतिक बनावट पर्यटन के मार्ग में बाधा है।
- (ii) 1966 में पंजाब के पुनर्गठन के बाद बहुत से सुन्दर स्थान हिमाचल को मिल गये।
- (iii) पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।
- (iv) वायु सेवा पर्यटन को बढ़ावा देगी।
- (v) मनीकरण में गर्म पानी के चश्में हैं।